एक बौना आदमी

और बहुत बड़ी गाय

स्कॉटिश लोककथा

चित्र: मर्सिया सीवॉल

एक बौना आदमी

और बहुत बड़ी गाय

स्कॉटिश लोककथा

बताओ उस बड़ी गाय के साथ क्या किया जाए जो दूध दूने के लिए स्थिर खड़ी नहीं होती है? बौने आदमी ने एक बड़ी छड़ी से उसे डराने की कोशिश की. उसने गाय की चापलूसी करने की कोशिश की, पर गाय ने बौने आदमी को केवल अपनी एड़ी से लात मारी.

बौना आदमी भला ऐसे हठी गाय का क्या करे?

एक बार की बात है जब सभी बड़े लोग बौने होते थे
और सभी जानवर बड़े होते थे. तब एक बौना आदमी
था और उसके पास एक बहुत बड़ी गाय थी. वो
सुबह-सुबह गाय का दूध दूहने गया.

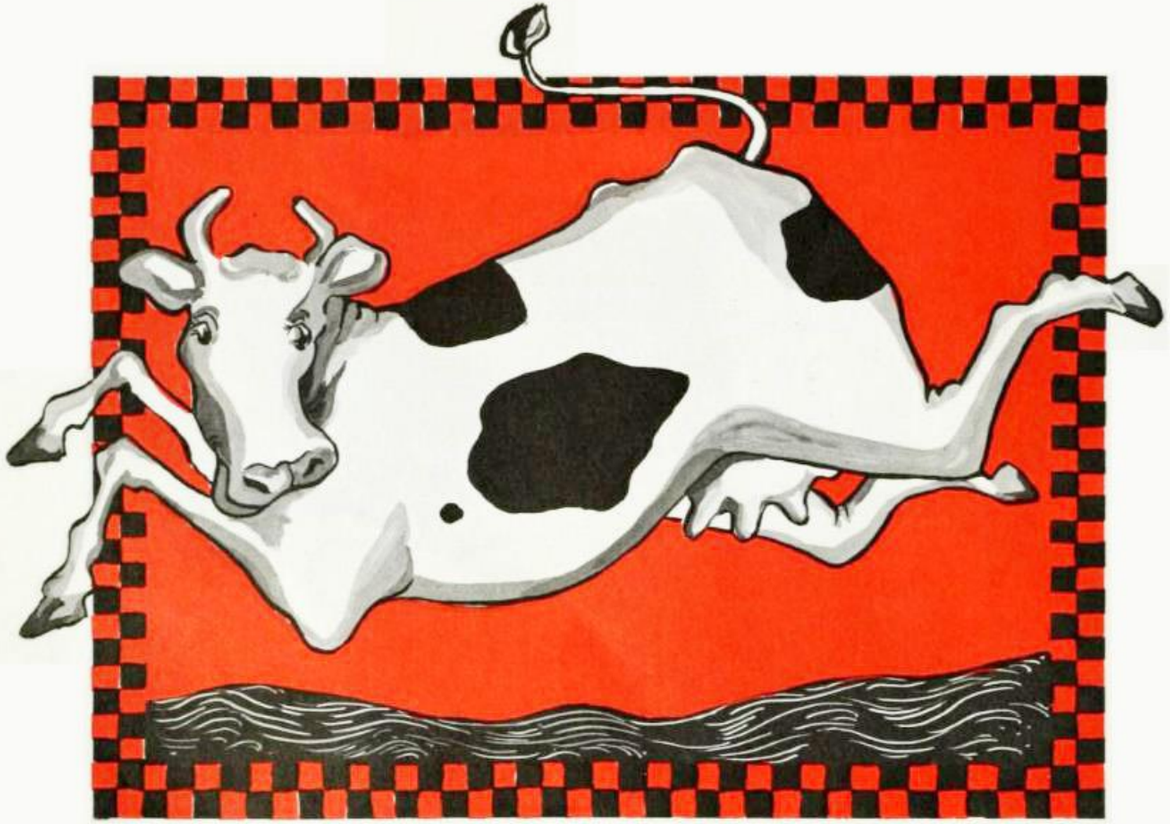

लेकिन बड़ी गाय ने उसे अपनी एड़ी से लात मारी और वो शांत और स्थिर नहीं रही.

"अब ज़रा इसे देखो," बौने आदमी ने कहा.

"एक छोटा बौना भला इतनी बड़ी गाय के साथ क्या कर सकता है?"

फिर बौना आदमी घर पर अपनी मां के पास गया.

"माँ," उसने कहा, "गाय शांत नहीं खड़ी है, इसलिए बौना आदमी बड़ी गाय का दूध नहीं निकाल सकता है."

"सुनो!" उसकी माँ ने कहा. "जाओ बड़ी, गाय से कहो कि उसे शांत खड़े होना चाहिए."

फिर बौना बड़ी गाय के पास गया और उसने कहा:

"बड़ी गाय देखो तुम अपनी मनमर्जी नहीं चला सकती हो.

तुम्हें शांत और स्थिर खड़े रहना चाहिए!

तुम्हें मेरा कहना मानना चाहिए!"

लेकिन बड़ी गाय ने ऐड़ी से अपनी लात मारी, अपनी पूंछ हिलाई, पर वो स्थिर नहीं रही.

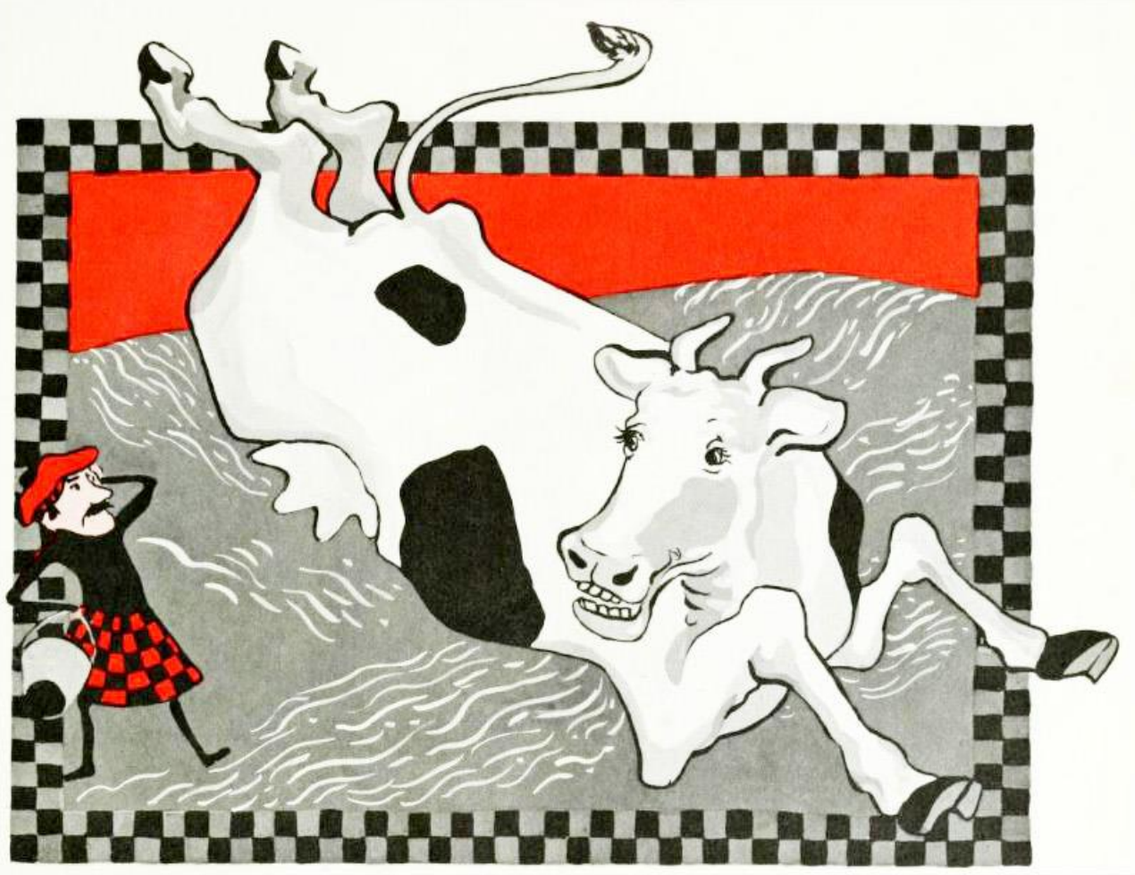

फिर वो बौना आदमी वापस घर गया और उसने कहा:

"माँ, मैंने बड़ी गाय को बताया कि उसे क्या चाहिए, लेकिन उसने वो नहीं किया, इसलिए मेरे जैसा बौना आदमी, बड़ी गाय का दूध नहीं निकाल सकता है."

"सुनो," उसकी माँ ने कहा, "जाओ एक मोटी छड़ी लेकर आओ और उसे बड़ी गाय के सामने हिलाओ."

फिर बौना आदमी एक मोटी छड़ी लेकर आया. उसने गाय के सामने वो बड़ी छड़ी हिलाई और कहा:

"बड़ी गाय, तुम स्थिर रहो, नहीं तो मैं तुम्हें मजबूत छड़ी का मज़ा चखाऊंगा."

लेकिन बड़ी गाय ने उसे अपनी ऐड़ी से लात मारी, अपनी पूंछ हिलाई, अपना सिर घुमाया, पर वो स्थिर नहीं रही.

फिर बौना आदमी वापस घर गया और उसने कहा: "माँ, मैंने बड़ी गाय को बताया कि उसे क्या करना चाहिए, मैंने उसके सामने बड़ी छड़ी भी जोर से हिलाई लेकिन वो अभी भी स्थिर नहीं खड़ी है, और इसलिए बौना आदमी बड़ी गाय का दूध नहीं निकाल सकता है."

"सुनो!" उसकी माँ ने कहा. "दर्ज़ी के पास जाओ और गाय को मनाने के लिए उसके लिए एक रेशम का गाउन सिलवाकर लाओ."

फिर बौना आदमी दर्ज़ी के पास गया और गाय के लिए रेशम का गाउन सिलवाकर लाया.

फिर उसने बड़ी गाय के सामने रेशम का गाउन फैलाया और कहा:

"स्थिर रहो, मेरी गाय, मेरी प्यारी गाय,

और मेरी बाल्टी को दूध से भर दो,

और यदि तुमने मेरी बात मानी,

तो मैं तुम्हें रेशम का गाउन पहना दूंगा."

लेकिन बड़ी गाय ने उसे अपनी ऐड़ी से लात मारी, अपनी पूंछ घुमाई, अपना सिर हिलाया, अपने सींग नीचे किए, पर वो स्थिर नहीं रही.

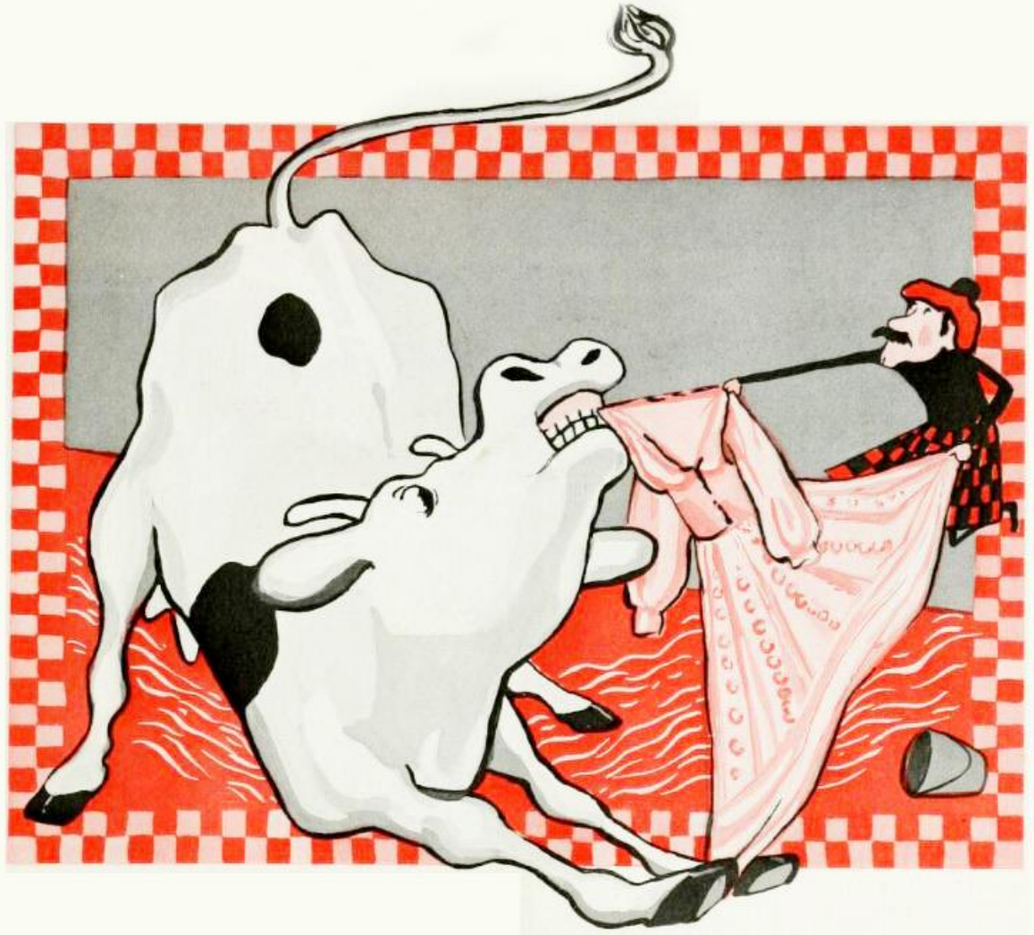

बौना आदमी फिर वापस घर गया और उसने कहा: "माँ, मैंने बड़ी गाय को बताया है कि उसे क्या करना चाहिए, मैंने उसके सामने बड़ी छड़ी को जोर से हिलाया, मैंने उसे रेशम का गाउन पहनाया, लेकिन गाय अभी भी स्थिर नहीं खड़ी है, इसलिए मैं बौना आदमी, बड़ी गाय का दूध नहीं निकाल सकता हूँ."

"सुनो!" उसकी माँ ने कहा, "फिर गाय के पास जाओ और उसके दिल को नरम करने वाली कुछ बात कहो. उससे कहो कि सड़क के किनारे सुंदर बालों वाली एक प्यारी महिला चलते-चलते थक गई है, और वो दूध के लिए तरस कर रो रही है."

फिर बौना आदमी दुबारा गाय के पास गया और उसने कहा:

"सड़क के किनारे एक महिला है,

लंबे और प्यारे बालों वाली;

वो चलते-चलते थक गई है,

और वो सड़क के किनारे बैठकर रो रही है.

देखो, कितनी बुरी बात है

कि वो दूध की एक बूंद के लिए रो रही है."

लेकिन बड़ी, बड़ी गाय ने सड़क के किनारे की महिला के लिए कुछ नहीं किया. उसने अपनी ऐड़ी से लात मारी, अपनी पूंछ घुमाई, अपना सिर हिलाया, अपने सींगों को नीचे किया, और वो जोर से चिल्लाई, "मू-ऊ, मू-ऊ!" और वो बिल्कुल स्थिर नहीं रही.

तो फिर वो बौना आदमी फिर वापस घर गया और उसने कहा: "माँ, मैंने बड़ी गाय को बताया है कि उसे क्या करना चाहिए, मैंने उसके सामने बड़ी छड़ी को जोर से हिलाया, मैंने उसे रेशम का गाउन पहनाया, मैंने उसके कठोर हृदय को नरम करने की कोशिश की है, लेकिन वो फिर भी स्थिर नहीं खड़ी है, और इसलिए बौना आदमी बड़ी गाय का दूध नहीं निकाल सकता है."

"ठीक है," उसकी माँ ने कहा, "फिर उस गाय के पास जाओ और उसे बताओ कि उसे कभी स्थिर खड़ा नहीं होना चाहिए. उसे एड़ी से लात मारने, पूंछ घुमाने, सिर को घुमाने, सींगों को नीचे करने, और जोर से 'मू -ऊ, मू-ऊ!' चिल्लाने को कहो. देखो उल्टी खोपड़ी की गाय, वो काम कभी नहीं करेगी जो तुम उससे करवाना चाहोगे.

फिर बौना आदमी बड़ी गाय के पास गया और उसने कहा:

"गाय, तुम्हें वहाँ कभी स्थिर खड़े नहीं होना चाहिए! तुम ऐड़ी से लात मारो और दहाड़ो! कभी भी सीधे खड़े होने की हिम्मत मत करना, मैं कहता हूँ, मैं तुम दिन भर लात मारो और पूरे दिन दहाड़ो!"

जब उसने यह सुना तब बड़ी गाय एकदम स्थिर खड़ी हो गई — एड़ी, पूंछ, सिर, सींग, आवाज, सब स्थिर. फिर बौने आदमी ने सुंदर बालों वाली प्यारी, महिला के लिए बड़ी गाय का दूध दुहा, और बड़ी गाय ने फिर कभी भी वैसा व्यवहार नहीं किया -

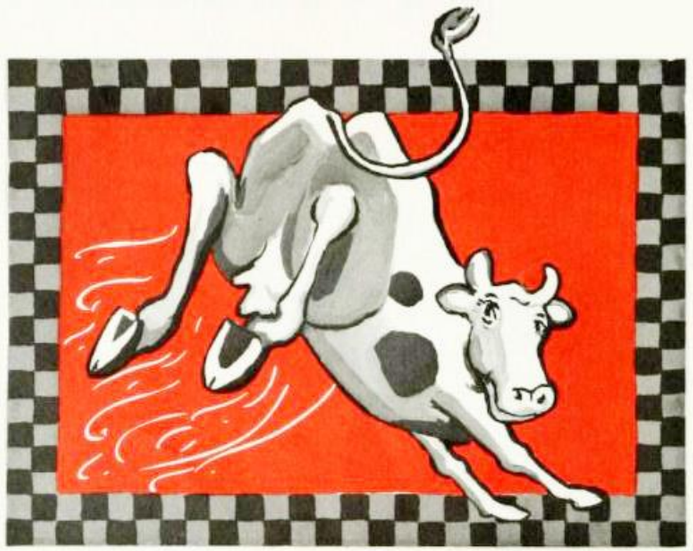

- अगली बार तक!